लेखांकन के सै(ांतिक आधर

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» लेखांकन के सैद्धांतिक आधार और उनकी आवश्यकता

प्रश्न 1 (आसान). लेखांकन के सिद्धांतों की आवश्यकता क्यों है?
उत्तर – ताकि वित्तीय जानकारी विश्वसनीय और समझने योग्य हो.

प्रश्न 2 (आसान). अगर कोई कंपनी लेखांकन सिद्धांतों का पालन न करे तो क्या होगा?
उत्तर – उसकी वित्तीय जानकारी पर कोई भरोसा नहीं करेगा.

प्रश्न 3 (मध्यम). लेखांकन सिद्धांत 'एकरूपता' लाने में कैसे मदद करते हैं?
उत्तर – वे यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी कंपनियां एक ही तरीके से अपने वित्तीय रिकॉर्ड रखें, जिससे उनकी तुलना करना आसान हो जाता है.

प्रश्न 4 (कठिन). ICAI (इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया) की क्या भूमिका है इन सिद्धांतों को लेकर?
उत्तर – ICAI समय-समय पर लेखांकन मानक जारी करता है, जो इन सिद्धांतों को लागू करने में मदद करते हैं और कंपनियों के लिए एकरूपता सुनिश्चित करते हैं.

» सामान्यतः मान्य लेखांकन सिद्धांत (GAAP)

प्रश्न 5 (आसान). GAAP का पूरा नाम क्या है?
उत्तर – Generally Accepted Accounting Principles (सामान्यतः मान्य लेखांकन सिद्धांत)

प्रश्न 6 (आसान). GAAP का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – लेखांकन अभिलेखों में एकरूपता और समरूपता लाना.

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर कोई कंपनी GAAP का पालन नहीं करती, तो क्या समस्या हो सकती है?
उत्तर – कंपनी के वित्तीय विवरणों पर भरोसा नहीं किया जा सकेगा और उनकी तुलना दूसरी कंपनियों से करना मुश्किल होगा, जिससे निवेशक और बैंक सही निर्णय नहीं ले पाएंगे.

प्रश्न 8 (कठिन). क्या GAAP के सिद्धांत समय के साथ बदलते हैं? उदाहरण सहित समझाएँ.
उत्तर – हाँ, GAAP के सिद्धांत स्थिर नहीं होते, वे उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं, कानूनी, सामाजिक और आर्थिक वातावरण के अनुसार बदलते रहते हैं. जैसे, पहले कुछ चीज़ें अलग तरह से दर्ज होती थीं, अब नए नियमों के अनुसार बदल गई हैं, ताकि वित्तीय जानकारी और ज़्यादा सटीक और उपयोगी बन सके. उदाहरण के लिए, लीज़ अकाउंटिंग के नियम समय-समय पर बदलते रहे हैं ताकि वे वित्तीय रिपोर्टिंग में अधिक पारदर्शिता ला सकें.

» व्यावसायिक इकाई संकल्पना

प्रश्न 9 (आसान). क्या एक बिजनेस और उसका मालिक लेखांकन के लिए एक ही व्यक्ति माने जाते हैं?
उत्तर – नहीं, व्यावसायिक इकाई संकल्पना के अनुसार वे दो अलग-अलग इकाईयाँ मानी जाती हैं।

प्रश्न 10 (आसान). जब मालिक व्यवसाय में पैसे लगाता है, तो व्यवसाय उसे क्या मानता है?
उत्तर – व्यवसाय उसे अपनी देनदारी (पूँजी) मानता है।

प्रश्न 11 (मध्यम). मालिक ने अपने घर का किराया व्यवसाय के खाते से चुकाया। क्या यह सही है? क्यों?
उत्तर – नहीं, यह सही नहीं है। व्यावसायिक इकाई संकल्पना के अनुसार, मालिक के निजी खर्चे व्यवसाय के खातों में दर्ज नहीं होने चाहिए, क्योंकि व्यवसाय और मालिक अलग-अलग इकाईयाँ हैं।

प्रश्न 12 (कठिन). किसी कंपनी में, निदेशक मंडल (Board of Directors) और कंपनी को अलग-अलग इकाईयाँ क्यों माना जाता है?
उत्तर – कंपनी एक कृत्रिम व्यक्ति है जिसका अपना कानूनी अस्तित्व होता है, जो व्यावसायिक इकाई संकल्पना के तहत निदेशकों या शेयरधारकों से अलग माना जाता है। इससे कंपनी की अपनी परिसंपत्तियाँ, देनदारियाँ और लाभ-हानि अलग से रिकॉर्ड की जाती है।

» मुद्रा मापन संकल्पना

प्रश्न 13 (आसान). क्या एक मज़दूर की ईमानदारी को लेखांकन पुस्तकों में रिकॉर्ड किया जा सकता है?
उत्तर – नहीं

प्रश्न 14 (आसान). क्या मशीन खरीदने के लिए किया गया भुगतान लेखांकन पुस्तकों में रिकॉर्ड किया जा सकता है?
उत्तर – हाँ

प्रश्न 15 (मध्यम). एक कंपनी ने 100 कंप्यूटर खरीदे जिनकी कुल कीमत ₹5,00,000 थी। इस लेन-देन से लेखांकन में क्या रिकॉर्ड होगा?
उत्तर – ₹5,00,000 की कीमत के कंप्यूटरों की खरीद।

प्रश्न 16 (कठिन). एक बिज़नेस के पास 2 एकड़ ज़मीन, 15 कंप्यूटर और 20 कुशल कर्मचारी हैं। इनमें से किन चीज़ों को मुद्रा मापन संकल्पना के अनुसार लेखांकन पुस्तकों में रिकॉर्ड किया जा सकता है, और कैसे?
उत्तर – 2 एकड़ ज़मीन और 15 कंप्यूटर को उनकी मौद्रिक कीमत (जैसे ज़मीन ₹1 करोड़ की, कंप्यूटर ₹5 लाख के) के रूप में रिकॉर्ड किया जाएगा। 20 कुशल कर्मचारियों की 'कुशलता' को रिकॉर्ड नहीं किया जा सकता, केवल उनके वेतन या मज़दूरी को मौद्रिक मूल्य में रिकॉर्ड किया जाएगा।

» सतत व्यापार संकल्पना

प्रश्न 17 (आसान). कौन सी संकल्पना मानती है कि व्यापार भविष्य में भी चलता रहेगा?
उत्तर – सतत व्यापार संकल्पना

प्रश्न 18 (आसान). अगर यह संकल्पना न होती, तो परिसंपत्तियों को खाते में कैसे दिखाया जाता?
उत्तर – पूरा मूल्य खरीद के वर्ष में ही खर्चे के रूप में दिखा दिया जाता।

प्रश्न 19 (मध्यम). सोहन ने ₹50,000 की नई दुकान खोली। यह मानते हुए कि दुकान लंबी चलेगी, उसने ₹20,000 का सामान खरीदा। लेखांकन में किस संकल्पना के कारण वह इस सामान को एक ही साल का खर्चा नहीं मानेगा?
उत्तर – सतत व्यापार संकल्पना

» लेखांकन अवधि संकल्पना

प्रश्न 20 (आसान). लेखांकन अवधि सामान्यतः कितने समय की होती है?
उत्तर – एक वर्ष

प्रश्न 21 (आसान). व्यवसाय वित्तीय विवरण कब बनाता है?
उत्तर – लेखांकन अवधि के अंत में

प्रश्न 22 (मध्यम). लेखांकन अवधि संकल्पना क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – ताकि व्यवसाय के प्रदर्शन और स्थिति का समय पर आकलन किया जा सके और सही निर्णय लिए जा सकें।

प्रश्न 23 (कठिन). अगर लेखांकन अवधि संकल्पना न हो, तो बिज़नेस मालिकों को क्या परेशानी हो सकती है?
उत्तर – बिज़नेस की असली स्थिति और लाभ/हानि जानने में बहुत देरी हो सकती है, जिससे सही समय पर ज़रूरी फैसले लेना मुश्किल हो जाएगा।

» लागत संकल्पना

प्रश्न 24 (आसान). अगर आपने एक फर्नीचर 10,000 रुपये में खरीदा और उसे दुकान तक लाने में 500 रुपये लगे, तो लेखा पुस्तकों में फर्नीचर का मूल्य क्या होगा?
उत्तर – 10,500 रुपये

प्रश्न 25 (आसान). लागत संकल्पना के अनुसार परिसंपत्तियों को किस मूल्य पर अभिलिखित किया जाता है?
उत्तर – क्रय मूल्य पर

प्रश्न 26 (मध्यम). एक बिज़नेस ने एक कंप्यूटर सिस्टम 45,000 रुपये में खरीदा। इसे इंस्टॉल करने और सॉफ्टवेयर डालने में 2,000 रुपये का खर्चा आया। कुल लागत क्या होगी?
उत्तर – 47,000 रुपये

प्रश्न 27 (कठिन). मेसर्स 'खुशी ट्रेडिंग' ने 1 मार्च 2023 को 20,00,000 रुपये में एक बिल्डिंग खरीदी। रजिस्ट्री के खर्चे 1,00,000 रुपये लगे और बिल्डिंग में कुछ छोटे-मोटे सुधार करने में 50,000 रुपये खर्च हुए ताकि वह इस्तेमाल योग्य बन जाए। लागत संकल्पना के अनुसार बिल्डिंग का मूल्य क्या होगा?
उत्तर – 21,50,000 रुपये

» द्विपक्षीय संकल्पना और लेखांकन समीकरण

प्रश्न 28 (आसान). एक व्यवसाय ने ₹10,000 का सामान नकद बेचा। इस लेन-देन का दोहरा प्रभाव क्या होगा?
उत्तर – नकद (परिसंपत्ति) ₹10,000 से बढ़ेगी और आय (पूंजी का हिस्सा) ₹10,000 से बढ़ेगी।

प्रश्न 29 (आसान). मालिक ने अपने बिज़नेस में ₹50,000 और लगाए। समीकरण पर क्या असर पड़ेगा?
उत्तर – नकद (परिसंपत्ति) ₹50,000 से बढ़ेगा और पूंजी ₹50,000 से बढ़ेगी।

प्रश्न 30 (मध्यम). एक बिज़नेस ने ₹30,000 का माल उधार खरीदा। इस लेन-देन का लेखांकन समीकरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर – स्टॉक (परिसंपत्ति) ₹30,000 से बढ़ेगा और लेनदार (देयता) ₹30,000 से बढ़ेगी।

प्रश्न 31 (कठिन). बिज़नेस ने ₹15,000 किराया नकद चुकाया। समीकरण पर क्या असर होगा?
उत्तर – नकद (परिसंपत्ति) ₹15,000 से घटेगा और व्यय (पूंजी को घटाने वाला) ₹15,000 से बढ़ेगा, जिससे पूंजी ₹15,000 से घटेगी।

» आगम मान्यता संकल्पना

प्रश्न 32 (आसान). क्या 'आगम मान्यता संकल्पना' का मतलब है कि आय को तभी रिकॉर्ड करें जब नकद प्राप्त हो?
उत्तर – नहीं, यह संकल्पना कहती है कि आय को तब रिकॉर्ड करें जब वह अर्जित हो जाए, न कि जब नकद प्राप्त हो।

प्रश्न 33 (आसान). एक कंपनी ने ₹10,000 की सेवाएँ प्रदान कीं, लेकिन भुगतान एक हफ़्ते बाद मिलेगा। क्या कंपनी को आज ही इस आय को रिकॉर्ड करना चाहिए?
उत्तर – हाँ, क्योंकि सेवाएँ प्रदान कर दी गई हैं, आय आज ही रिकॉर्ड की जाएगी।

प्रश्न 34 (मध्यम). जनवरी में ₹15,000 का सामान उधार बेचा गया। ग्राहक ने फरवरी में भुगतान किया। 'आगम मान्यता संकल्पना' के अनुसार आय किस महीने में रिकॉर्ड होगी?
उत्तर – जनवरी में, क्योंकि सामान जनवरी में बेचा गया था।

प्रश्न 35 (कठिन). एक रियल एस्टेट कंपनी ने एक घर बेचने का कॉन्ट्रैक्ट साइन किया और ₹5 लाख की एडवांस राशि मिली, लेकिन घर का कब्ज़ा अभी दिया नहीं है। क्या कंपनी को ₹5 लाख की पूरी राशि को 'आगम' मान लेना चाहिए?
उत्तर – नहीं, जब तक घर का कब्ज़ा (सेवा) पूरी तरह से ग्राहक को नहीं दे दिया जाता और बिक्री पूरी नहीं हो जाती, तब तक इसे 'आगम' नहीं माना जाएगा, यह एक 'देयता' (liability) के रूप में रहेगा।

» आगम व्यय मिलान संकल्पना

प्रश्न 36 (आसान). अगर जनवरी महीने की सैलरी फरवरी में दी जाती है, तो वह किस महीने का खर्चा मानी जाएगी?
उत्तर – जनवरी महीने का

प्रश्न 37 (आसान). क्या 'आगम व्यय मिलान संकल्पना' में नकद भुगतान का इंतज़ार किया जाता है?
उत्तर – नहीं

प्रश्न 38 (मध्यम). एक दुकानदार ने मार्च में ₹10,000 का सामान बेचा। इस सामान को उसने फरवरी में ₹6,000 में खरीदा था, और भुगतान भी फरवरी में ही कर दिया था। मार्च महीने का शुद्ध लाभ क्या होगा?
उत्तर – ₹4,000 (₹10,000 आगम - ₹6,000 व्यय)

प्रश्न 39 (कठिन). एक कंपनी ने 1 लाख रुपये का बीमा करवाया, जो 1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 तक के लिए था। उन्होंने पूरा प्रीमियम 1 अप्रैल 2023 को भर दिया। 31 दिसंबर 2023 को खत्म होने वाले 9 महीनों के लिए बीमा का कितना खर्चा 'आगम व्यय मिलान संकल्पना' के अनुसार दिखाया जाएगा?
उत्तर – ₹75,000 (1 लाख का 9/12 हिस्सा)

» पूर्ण प्रस्तुतिकरण संकल्पना

प्रश्न 40 (आसान). पूर्ण प्रस्तुतिकरण संकल्पना क्या सुनिश्चित करती है?
उत्तर – व्यवसाय के वित्तीय प्रदर्शन से जुड़े सभी सारपूर्ण व आवश्यक तथ्यों का पूर्ण व सही प्रस्तुतिकरण।

प्रश्न 41 (आसान). क्या इस संकल्पना में सिर्फ संख्यात्मक जानकारी शामिल है?
उत्तर – नहीं, इसमें संख्यात्मक जानकारी के साथ-साथ टिप्पणियां और पाद-टिप्पणियां भी शामिल हैं।

प्रश्न 42 (मध्यम). यदि कंपनी ने अगले वर्ष एक बड़ा निवेश करने की योजना बनाई है, तो क्या यह जानकारी वित्तीय विवरणों में दिखानी चाहिए? क्यों?
उत्तर – हाँ, यदि यह निवेश सारपूर्ण है और व्यवसाय के भविष्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालेगा, तो इसे टिप्पणियों में दर्शाना चाहिए ताकि उपयोगकर्ता सही निर्णय ले सकें।

प्रश्न 43 (कठिन). एक कंपनी ने अपनी लेखांकन नीति में बदलाव किया है (जैसे, मूल्यह्रास की विधि)। 'पूर्ण प्रस्तुतिकरण संकल्पना' के अनुसार, उसे इस बारे में क्या करना चाहिए?
उत्तर – कंपनी को इस बदलाव का कारण, इसके प्रभाव (संख्यात्मक रूप से) और नई नीति के बारे में पूर्ण जानकारी वित्तीय विवरणों की टिप्पणियों में देनी चाहिए ताकि तुलनात्मक अध्ययन प्रभावित न हो।

» समनुरूपता की संकल्पना

प्रश्न 44 (आसान). अगर एक कंपनी हर साल अपनी संपत्ति पर घिसावट (Depreciation) निकालने का एक ही तरीका अपनाती है, तो वह किस संकल्पना का पालन कर रही है?
उत्तर – समनुरूपता की संकल्पना।

प्रश्न 45 (आसान). सत्य या असत्य: समनुरूपता की संकल्पना का अर्थ है कि लेखांकन नीतियां कभी नहीं बदली जा सकतीं।
उत्तर – असत्य।

प्रश्न 46 (मध्यम). एक कंपनी ने पिछले साल अपनी मशीनरी की घिसावट के लिए 'सीधी रेखा विधि' (Straight Line Method) का इस्तेमाल किया था। इस साल उसने 'घटते शेष विधि' (Written Down Value Method) का इस्तेमाल किया। क्या यह 'समनुरूपता की संकल्पना' का उल्लंघन है? समझाओ।

उत्तर – यह उल्लंघन नहीं है, बशर्ते कंपनी ने इस नीति परिवर्तन को अपने वित्तीय विवरणों में पूरी तरह से प्रकट किया हो और इसके वित्तीय प्रभावों का स्पष्टीकरण दिया हो।

प्रश्न 47 (कठिन). मोहन अपनी दो अलग-अलग दुकानों का हिसाब रखता है। एक दुकान में वह स्टॉक का मूल्यांकन 'फीफो' विधि से करता है और दूसरी दुकान में 'लास्ट इन फर्स्ट आउट (LIFO)' विधि से। क्या यह 'समनुरूपता की संकल्पना' का उल्लंघन है? क्यों?

उत्तर – हाँ, यह 'समनुरूपता की संकल्पना' का उल्लंघन है। समनुरूपता सिर्फ एक ही कंपनी के अलग-अलग वर्षों पर लागू नहीं होती, बल्कि समान प्रकार के व्यवसायों या एक ही व्यवसाय की अलग-अलग शाखाओं के बीच तुलना के लिए भी एकरूपता होनी चाहिए। अलग-अलग विधि अपनाने से दोनों दुकानों के प्रदर्शन की सही तुलना करना मुश्किल होगा।

» रूढ़िवादिता (विवेकशीलता) की संकल्पना

प्रश्न 48 (आसान). रूढ़िवादिता की संकल्पना का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर – विवेकशीलता की संकल्पना

प्रश्न 49 (आसान). इस संकल्पना में क्या हमें संभावित लाभों को तुरंत दर्ज करना चाहिए?

उत्तर – नहीं, जब तक वे वास्तव में अर्जित न हों।

प्रश्न 50 (मध्यम). अगर किसी देनदार (ग्राहक) से पैसे मिलने की उम्मीद कम हो, तो लेखांकन में क्या किया जाता है?

उत्तर – संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान किया जाता है।

प्रश्न 51 (कठिन). एक कंपनी ने ₹50,000 का माल खरीदा था। साल के अंत में, उस माल का बाज़ार मूल्य ₹60,000 हो गया है। कंपनी इसे अपनी लेखा-पुस्तकों में किस मूल्य पर दिखाएगी और क्यों?

उत्तर – कंपनी इसे ₹50,000 पर ही दिखाएगी। रूढ़िवादिता की संकल्पना के अनुसार, संभावित लाभों को तब तक दर्ज नहीं किया जाता जब तक वे वास्तविक रूप से अर्जित न हों। माल बेचने पर ही लाभ दर्ज होगा।

» सारता की संकल्पना

प्रश्न 52 (आसान). सारता की संकल्पना किस पर ध्यान केंद्रित करने को कहती है?

उत्तर – महत्वपूर्ण तथ्यों पर।

प्रश्न 53 (आसान). क्या ₹50 के इरेज़र को संपत्ति मानना चाहिए?

उत्तर – नहीं, यह एक मामूली व्यय है।

प्रश्न 54 (मध्यम). एक कंपनी ने ₹5,00,000 का नया कंप्यूटर सिस्टम खरीदा और ₹200 का एक माउसपैड। सारता के अनुसार किसे परिसंपत्ति मानेंगे?

उत्तर – ₹5,00,000 के कंप्यूटर सिस्टम को परिसंपत्ति मानेंगे। माउसपैड को व्यय मानेंगे।

प्रश्न 55 (कठिन). यदि किसी कंपनी को भविष्य में ₹100 करोड़ का कोई कानूनी दावा होने की संभावना है, तो क्या इस तथ्य को वित्तीय विवरणों में प्रकट करना सारता की संकल्पना के अनुरूप होगा? क्यों?

उत्तर – हाँ, बिल्कुल। ₹100 करोड़ की राशि कंपनी के उपयोगकर्ताओं के निर्णयों को बहुत ज़्यादा प्रभावित कर सकती है। इसलिए इसे वित्तीय विवरणों के नोट्स में प्रकट करना सारता की संकल्पना के अनुरूप होगा, ताकि उपयोगकर्ताओं को पूरी और सही जानकारी मिले।

» वस्तुनिष्ठता की संकल्पना

प्रश्न 56 (आसान). क्या लेखांकन करते समय लेखापाल अपनी पसंद-नापसंद के हिसाब से रकम बदल सकता है?
उत्तर – नहीं।

प्रश्न 57 (आसान). अगर कोई लेन-देन हुआ है, लेकिन उसकी कोई पक्की रसीद नहीं है, तो क्या उसे रिकॉर्ड करना चाहिए?
उत्तर – नहीं, जब तक कोई सहायक दस्तावेज़ न हो, उसे रिकॉर्ड नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 58 (मध्यम). विजय ने ₹10,000 का सामान बेचा। ग्राहक ने पैसे नकद दिए लेकिन विजय ने कोई रसीद नहीं दी। क्या यह लेन-देन वस्तुनिष्ठता के हिसाब से ठीक है?
उत्तर – नहीं, क्योंकि कोई रसीद (प्रमाणक) नहीं दी गई, जिससे लेन-देन को सत्यापित किया जा सके।

प्रश्न 59 (कठिन). एक पुरानी मशीन, जिसे ₹1,00,000 में खरीदा था, उसका बाज़ार मूल्य आज ₹2,00,000 है। क्या आप उसे किताबों में ₹2,00,000 पर दिखा सकते हैं और क्यों?
उत्तर – नहीं, क्योंकि बाज़ार मूल्य एक अनुमान है और इसमें व्यक्तिपरक राय शामिल हो सकती है। इसे वस्तुनिष्ठता की संकल्पना के अनुसार नहीं माना जाएगा, क्योंकि इसका कोई दस्तावेजी सबूत नहीं है। मशीन को उसके ऐतिहासिक लागत ₹1,00,000 पर ही दिखाया जाएगा।

» लेखांकन प्रणालियाँ: द्विअंकन और एकल अंकन

प्रश्न 60 (आसान). द्विअंकन प्रणाली में हर लेन-देन के कितने प्रभाव होते हैं?
उत्तर – दो प्रभाव होते हैं।

प्रश्न 61 (आसान). एकल अंकन प्रणाली में कौन से खाते मुख्य रूप से रखे जाते हैं?
उत्तर – व्यक्तिगत खाते और रोकड़ बही।

प्रश्न 62 (मध्यम). बड़े व्यवसायों के लिए कौन सी लेखांकन प्रणाली अधिक उपयुक्त है और क्यों?
उत्तर – बड़े व्यवसायों के लिए द्विअंकन प्रणाली अधिक उपयुक्त है क्योंकि यह विश्वसनीय, पूर्ण होती है और धोखाधड़ी की संभावना कम करती है।

प्रश्न 63 (कठिन). द्विअंकन प्रणाली को क्यों अधिक विश्वसनीय माना जाता है, जबकि एकल अंकन प्रणाली को नहीं?
उत्तर – द्विअंकन प्रणाली हर लेन-देन के दोनों पक्षों का लेखा करती है, जिससे खातों में गणितीय अशुद्धियों को तलपट बनाकर सुधारा जा सकता है और धोखाधड़ी की संभावना कम होती है। वहीं, एकल अंकन प्रणाली कुछ लेन-देनों का केवल एक ही पक्ष दर्ज करती है, जिससे हिसाब-किताब अधूरा और अव्यवस्थित रहता है, और विश्वसनीयता कम हो जाती है।

» लेखांकन के आधार: नकद और उपार्जन

प्रश्न 64 (आसान). क्या नकद आधार पर लेखांकन हर तरह के व्यापार के लिए सही है?
उत्तर – नहीं, यह छोटे व्यवसायों के लिए ठीक हो सकता है लेकिन बड़े व्यवसायों के लिए सही लाभ नहीं दिखाता।

प्रश्न 65 (आसान). उपार्जन आधार पर व्यय कब दर्ज किया जाता है?
उत्तर – जब वह व्यय हुआ हो, भले ही उसका भुगतान न हुआ हो।

प्रश्न 66 (मध्यम). अगर आपने दिसंबर में अपने कर्मचारी को काम पर रखा लेकिन उसकी जनवरी की सैलरी फरवरी में दी, तो उपार्जन आधार पर सैलरी कब दर्ज होगी?
उत्तर – जनवरी में, क्योंकि सैलरी जनवरी के महीने के लिए 'उपार्जित' (earned) हो गई थी।

प्रश्न 67 (कठिन). एक निर्माण कंपनी ने मशीन बनाने का कॉन्ट्रैक्ट मार्च में लिया। काम अप्रैल में पूरा हुआ और ग्राहक ने भुगतान मई में किया। उपार्जन आधार पर आय कब दर्ज होगी और क्यों?
उत्तर – आय अप्रैल में दर्ज होगी, क्योंकि काम अप्रैल में पूरा हुआ और तभी आय 'उपार्जित' हुई, यानी कंपनी को उस आय पर अधिकार मिल गया।

» लेखांकन मानक: आवश्यकता, लाभ और सीमाएं

प्रश्न 68 (आसान). लेखांकन मानक का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – वित्तीय विवरणों में एकरूपता और विश्वसनीयता लाना।

प्रश्न 69 (आसान). भारत में लेखांकन मानक कौन जारी करता है?
उत्तर – ICAI (इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया)।

प्रश्न 70 (मध्यम). लेखांकन मानकों के कोई दो लाभ बताइए।
उत्तर – वित्तीय विवरणों की तुलनात्मकता बढ़ाना और वैकल्पिक लेखांकन व्यवहारों में भिन्नता दूर करना।

प्रश्न 71 (कठिन). लेखांकन मानकों की कोई एक सीमा क्या है, जो इसे लागू करने में मुश्किल पैदा करती है?
उत्तर – यह विभिन्न वैकल्पिक लेखांकन व्यवहारों में से चुनाव करना होता है, जिससे प्रयोग में लाने में कठिनाई आती है, और इनमें लोचशीलता की कमी होती है।

» वस्तु एवं सेवा कर (GST)

प्रश्न 72 (आसान). GST का पूरा नाम क्या है?
उत्तर – वस्तु एवं सेवा कर (Goods and Services Tax)

प्रश्न 73 (आसान). अगर कोई सामान राजस्थान के अंदर बेचा गया है, तो उस पर कौन-से GST लगेंगे?
उत्तर – CGST और SGST

प्रश्न 74 (मध्यम). एक दुकानदार ने गुजरात से महाराष्ट्र ₹10,000 का माल बेचा। यदि GST की दर 12% है, तो उसे कितना IGST लगाना होगा?
उत्तर – ₹1200

प्रश्न 75 (कठिन). GST आने से पहले के किसी एक अप्रत्यक्ष कर का नाम बताओ जिसे GST में शामिल कर लिया गया है।
उत्तर – जैसे: उत्पाद शुल्क (Excise Duty), सेवा कर (Service Tax), बिक्री कर (Sales Tax) आदि।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक कंपनी ने बिना किसी सिद्धांत का पालन किए अपनी बैलेंस शीट बना दी. इसमें क्या समस्याएँ आ सकती हैं?

› पहला कदम: सभी लेन-देन को अपनी मर्ज़ी से दर्ज किया गया, कुछ को रुपये में और कुछ को सिर्फ़ गिनती में.
› दूसरा कदम: कुछ संपत्तियों को उनके असली दाम पर दिखाया, जबकि कुछ को बढ़ा-चढ़ाकर या घटाकर दिखा दिया.
› तीसरा कदम: कंपनी के मालिक के निजी खर्चों को भी कंपनी के खर्चों में मिला दिया गया.
› चौथा कदम: बैलेंस शीट में कोई तय फॉर्मेट नहीं था, सब अपनी-अपनी मर्जी से लिख दिया.

उत्तर – ऐसी बैलेंस शीट बिल्कुल अविश्वसनीय होगी. बैंक उसे लोन नहीं देगा, निवेशक उसमें पैसा नहीं लगाएंगे और खुद कंपनी का मालिक भी सही निर्णय नहीं ले पाएगा क्योंकि उसे असल में पता ही नहीं चलेगा कि कंपनी की आर्थिक स्थिति क्या है. यह ठीक वैसा ही होगा जैसे किसी ने कोई बिल्डिंग बना दी पर उसकी कोई ब्लू प्रिंट ही नहीं थी, कोई प्लान ही नहीं था.

उदाहरण 2. एक कंपनी ने अपनी ज़मीन ₹5 लाख में खरीदी, लेकिन आज उसकी बाज़ार कीमत ₹8 लाख है. GAAP के अनुसार, उसे अपने खातों में ज़मीन की कीमत क्या दिखानी चाहिए?

› GAAP के 'ऐतहिसकि लागत सद्धिांत' (Historical Cost Principle) के अनुसार, संपत्तको हमेशा उसकी मूल खरीद कीमत पर ही दर्ज किया जाता है.
› भले ही बाज़ार मूल्य बढ़ गया हो, लेकिन लेखांकन में हम उसे तब तक नहीं बदलते जब तक कोई बिक्री या विशेष मूल्यांकन न हो.
› यह सिद्धांत वस्तुनिष्ठता और सत्यापन पर ज़ोर देता है, यानी जो कीमत बिल में है, वही दिखाओ.

उत्तर – कंपनी को अपनी ज़मीन की कीमत खातों में ₹5 लाख ही दिखानी चाहिए.

उदाहरण 3. श्री राम ने ₹5,00,000 लगाकर 'राम ट्रेडर्स' नाम से एक व्यवसाय शुरू किया। उन्होंने अपने निजी खर्चों के लिए ₹20,000 व्यवसाय से निकाले। लेखांकन के हिसाब से इन लेन-देनों को कैसे दिखाएंगे?

› स्टेप 1: जब श्री राम ने ₹5,00,000 लगाए, तो 'राम ट्रेडर्स' के लिए यह पूँजी है। व्यावसायिक इकाई संकल्पना के अनुसार, यह व्यवसाय की श्री राम के प्रति देनदारी है। हम इसे 'पूँजी' खाते में क्रेडिट करेंगे और 'नकद' खाते में डेबिट करेंगे।

› स्टेप 2: जब श्री राम ने ₹20,000 अपने निजी खर्चों के लिए निकाले, तो यह 'आहरण (Drawings)' कहलाएगा। यह व्यवसाय की देनदारी (पूँजी) को कम करेगा। हम 'आहरण' खाते को डेबिट करेंगे और 'नकद' खाते को क्रेडिट करेंगे।

› स्टेप 3: इसका मतलब है कि अब व्यवसाय पर श्री राम की देनदारी ₹5,00,000 - ₹20,000 = ₹4,80,000 रह गई है।

उत्तर – व्यवसाय में पूँजी लगाना व्यवसाय की देनदारी के रूप में दर्ज होगा, और निजी उपयोग के लिए पैसे निकालना उस देनदारी को कम करेगा।

उदाहरण 4. एक कंपनी ने एक नया मार्केटिंग मैनेजर नियुक्त किया। मैनेजर की योग्यता और अनुभव बहुत अच्छा था, और कंपनी ने उसे 50,000 रुपये मासिक वेतन पर रखा। इस जानकारी में से कौन सी चीज़ लेखांकन पुस्तकों में दर्ज की जाएगी?

› पहला कदम है यह पहचानना कि यहाँ कौन-कौन सी घटनाएँ या बातें हुई हैं।

› एक बात है 'मैनेजर की नियुक्ति' और 'उसकी योग्यता'।

› दूसरी बात है '50,000 रुपये मासिक वेतन'।

› अब, मुद्रा मापन संकल्पना के अनुसार, हमें देखना है कि इनमें से किसे पैसों में मापा जा सकता है।

› 'मैनेजर की नियुक्ति' और 'उसकी योग्यता' को हम सीधे पैसों में माप नहीं सकते। ये गुणात्मक पहलू हैं।

› लेकिन '50,000 रुपये मासिक वेतन' एक निश्चित मौद्रिक मूल्य है जिसे हम आसानी से माप सकते हैं।

› इसलिए, सिर्फ़ '50,000 रुपये मासिक वेतन' को ही लेखांकन पुस्तकों में दर्ज किया जाएगा।

उत्तर – लेखांकन पुस्तकों में केवल '50,000 रुपये मासिक वेतन' को ही दर्ज किया जाएगा, क्योंकि यह एक मौद्रिक लेन-देन है।

उदाहरण 5. मेसर्स रामा एंटरप्राइजेज ने 1 जनवरी 2023 को ₹1,00,000 की एक मशीन खरीदी। मशीन की अनुमानित उपयोगी आयु 10 वर्ष है। सतत व्यापार संकल्पना के अनुसार, 31 दिसंबर 2023 को खाते में मशीन का कितना मूल्य दिखाया जाएगा?

› मशीन की कुल लागत = ₹1,00,000

› मशीन की अनुमानित उपयोगी आयु = 10 वर्ष

› सतत व्यापार संकल्पना के अनुसार, मशीन का मूल्य उसकी पूरी उपयोगी आयु में बांटा जाएगा।

› हर साल का मूल्यह्रास (Depreciation) = कुल लागत / उपयोगी आयु = ₹1,00,000 / 10 = ₹10,000

› 31 दिसंबर 2023 को, मशीन की पुस्तक मूल्य = कुल लागत - पहले साल का मूल्यह्रास

› = ₹1,00,000 - ₹10,000

उत्तर – ₹90,000

उदाहरण 6. राहुल ने 1 जनवरी 2023 को एक नया कपड़े का बिज़नेस शुरू किया। उसे अपने बिज़नेस की आर्थिक स्थिति और लाभ/हानि कब जाननी चाहिए?

› लेखांकन अवधि संकल्पना के अनुसार, बिज़नेस को अपनी वित्तीय स्थिति जानने के लिए एक निश्चित समय अवधि चुननी होगी।

› भारत में सामान्यतः यह अवधि 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होती है (वित्तीय वर्ष)।

› इस स्थिति में, राहुल को 31 मार्च 2024 को अपने पहले वित्तीय विवरण (लाभ-हानि खाता और बैलेंस शीट) तैयार करने चाहिए।

उत्तर – राहुल को 31 मार्च 2024 को अपनी पहली लेखांकन अवधि का अंत मानकर वित्तीय विवरण तैयार करने चाहिए।

उदाहरण 7. मेसर्स 'नया भारत' ने 1 जनवरी 2023 को एक पुरानी मशीन 5,00,000 रुपये में खरीदी। इसे फ़ैक्टरी तक लाने में 15,000 रुपये लगे और इसे लगाने (installation) में 20,000 रुपये का खर्च आया। लेखा पुस्तकों में मशीन का क्या मूल्य दर्ज किया जाएगा?

› मशीन का क्रय मूल्य = 5,00,000 रुपये

› परिवहन व्यय = 15,000 रुपये

› स्थापना व्यय = 20,000 रुपये

› कुल लागत = क्रय मूल्य + परिवहन व्यय + स्थापना व्यय

› कुल लागत = 5,00,000 + 15,000 + 20,000

उत्तर – लेखा पुस्तकों में मशीन का मूल्य 5,35,000 रुपये दर्ज किया जाएगा।

उदाहरण 8. एक बिज़नेस ने ₹2,00,000 की मशीन नकद खरीदी। इस लेन-देन का लेखांकन समीकरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

› पहचानो कि क्या बदला: मशीन आई (परिसंपत्ति बढ़ी), नकद गया (परिसंपत्ति घटी)।

› समीकरण लिखो: परिसंपत्तियां = देयताएं + पूंजी।

› मशीन (परिसंपत्ति) ₹2,00,000 से बढ़ी।

› नकद (परिसंपत्ति) ₹2,00,000 से घटा।

› तो, परिसंपत्तियों में कुल प्रभाव (₹2,00,000 - ₹2,00,000) = ₹0 रहा।

› देयताओं और पूंजी पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ा।

› समीकरण अभी भी संतुलित है।

उत्तर – इस लेन-देन से कुल परिसंपत्तियों पर कोई शुद्ध प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि एक परिसंपत्ति (मशीन) बढ़ी और दूसरी परिसंपत्ति (नकद) उसी राशि से घटी। देयताएं और पूंजी अपरिवर्तित रहीं।

उदाहरण 9. मार्च 2023 में 'श्री राम ट्रेडर्स' ने ₹50,000 का सामान बेचा। इसमें से ₹30,000 नकद प्राप्त हुए और ₹20,000 एक महीने बाद प्राप्त होंगे। आगम मान्यता संकल्पना के अनुसार 'श्री राम ट्रेडर्स' मार्च 2023 के लिए कितनी आय को लेखा पुस्तकों में दर्शाएगा?

› पहला कदम: हमें देखना है कि कुल कितना सामान बेचा गया है, क्योंकि 'सामान बेचना' ही आय अर्जित करने का मुख्य आधार है।

› दूसरा कदम: यहाँ कुल ₹50,000 का सामान बेचा गया है।

› तीसरा कदम: आगम मान्यता संकल्पना के अनुसार, हमें यह नहीं देखना कि कितना पैसा नकद मिला और कितना बाद में मिलेगा। हमें बस यह देखना है कि आय 'अर्जित' कब हुई।

› चौथा कदम: क्योंकि सारा सामान मार्च 2023 में ही बेच दिया गया है, इसलिए पूरी ₹50,000 की आय मार्च 2023 के लिए ही मानी जाएगी।

› पांचवां कदम: इसमें से नकद ₹30,000 और उधार ₹20,000, दोनों ही आय का हिस्सा माने जाएंगे।

उत्तर – मार्च 2023 के लिए 'श्री राम ट्रेडर्स' ₹50,000 की आय को अपनी लेखा पुस्तकों में दर्शाएगा।

उदाहरण 10. एक कंपनी ने मार्च 2024 में ₹50,000 का सामान क्रेडिट पर बेचा (यानी पैसा अभी नहीं मिला)। इस सामान को खरीदने में ₹30,000 का खर्च आया था, जिसका भुगतान अप्रैल 2024 में किया गया। मार्च 2024 के लिए कंपनी का शुद्ध लाभ ज्ञात करें।

› स्टेप 1: मार्च 2024 के 'आगम' को पहचानें। कंपनी ने ₹50,000 का सामान बेच दिया है, तो यह मार्च 2024 का आगम है, भले ही पैसा अभी नहीं मिला।

› स्टेप 2: मार्च 2024 के 'व्यय' को पहचानें। सामान को खरीदने में ₹30,000 का खर्च आया था, और यह सामान मार्च में बेचा गया है, इसलिए यह ₹30,000 मार्च 2024 का ही व्यय है, भले ही भुगतान अप्रैल में हुआ हो।

› स्टेप 3: आगम में से व्यय घटाकर शुद्ध लाभ ज्ञात करें। शुद्ध लाभ = ₹50,000 (आगम) - ₹30,000 (व्यय)।

उत्तर – मार्च 2024 के लिए कंपनी का शुद्ध लाभ ₹20,000 है।

उदाहरण 11. एक कंपनी ने एक नया केस फाइल किया है जिसमें उस पर ₹50 लाख का जुर्माना लग सकता है। वित्तीय वर्ष के अंत तक यह केस चल रहा है और अभी कोई फैसला नहीं आया है। कंपनी को इसे अपने वित्तीय विवरणों में कैसे दिखाना चाहिए?

› कंपनी को अपने लाभ-हानि खाते में ₹50 लाख की संभावित हानि को सीधे नहीं दिखाना चाहिए क्योंकि अभी केस का फैसला नहीं आया है।

› लेकिन 'पूर्ण प्रस्तुतिकरण संकल्पना' के अनुसार, कंपनी को अपने वित्तीय विवरणों के नीचे 'नोट्स टू अकाउंट्स' या पाद-टिप्पणियों (Footnotes) में इस लंबित केस और ₹50 लाख के संभावित जुर्माने के बारे में पूरी जानकारी देनी चाहिए।

› इस जानकारी से वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं को कंपनी के भविष्य पर पड़ने वाले संभावित प्रभाव के बारे में पता चलेगा और वे सही निर्णय ले पाएंगे।

उत्तर – ₹50 लाख के संभावित जुर्माने का विवरण वित्तीय विवरणों की पाद-टिप्पणियों में देना अनिवार्य है, न कि सीधे लाभ-हानि खाते में।

उदाहरण 12. XYZ कंपनी ने वर्ष 2022 में स्टॉक के मूल्यांकन के लिए 'फर्स्ट इन, फर्स्ट आउट (FIFO)' विधि का उपयोग किया। वर्ष 2023 में कंपनी ने 'लास्ट इन, फर्स्ट आउट (LIFO)' विधि का उपयोग करने का निर्णय लिया। समनुरूपता की संकल्पना के अनुसार, कंपनी को क्या करना चाहिए?

› पहला कदम: XYZ कंपनी ने स्टॉक मूल्यांकन की विधि बदली है, जो 'समनुरूपता की संकल्पना' के खिलाफ हो सकती है, यदि इसे ठीक से हैंडल न किया जाए।

› दूसरा कदम: कंपनी को अपने वित्तीय विवरणों में साफ-साफ बताना होगा कि उसने स्टॉक मूल्यांकन की विधि क्यों बदली है।

› तीसरा कदम: कंपनी को यह भी स्पष्ट करना होगा कि इस बदलाव का वर्ष 2023 के लाभ और हानि खाते (Profit and Loss Account) और बैलेंस शीट (Balance Sheet) पर क्या प्रभाव पड़ा है।

उत्तर – कंपनी को अपनी लेखांकन नीति में बदलाव को पूरी तरह से प्रकट करना चाहिए और उसके वित्तीय प्रभावों को स्पष्ट रूप से दर्शाना चाहिए, ताकि वित्तीय विवरणों की तुलनात्मकता बनी रहे।

उदाहरण 13. एक व्यापारी के पास 1000 वस्तुएं हैं। उसने इन्हें ₹10 प्रति वस्तु के हिसाब से खरीदा था। साल के अंत में, इन वस्तुओं का बाज़ार मूल्य ₹8 प्रति वस्तु हो गया है। रूढ़िवादिता की संकल्पना के अनुसार, वह स्टॉक का मूल्यांकन कैसे करेगा?

› वस्तुओं का खरीद मूल्य (Cost Price) = 1000 वस्तुएं × ₹10/वस्तु = ₹10,000

› वस्तुओं का बाज़ार मूल्य (Market Price) = 1000 वस्तुएं × ₹8/वस्तु = ₹8,000

› रूढ़िवादिता की संकल्पना के अनुसार, स्टॉक का मूल्यांकन 'लागत मूल्य या बाज़ार मूल्य, जो कम हो' पर किया जाता है।

› ₹10,000 और ₹8,000 में से कम मूल्य ₹8,000 है।

› तो, व्यापारी अपने स्टॉक का मूल्यांकन ₹8,000 पर करेगा।

उत्तर – ₹8,000

उदाहरण 14. एक बड़ी कंपनी ने ₹10,00,000 की नई मशीन खरीदी और उसी दिन ₹500 के दो पैकेट पिन (stapler pins) भी खरीदे। सारता की संकल्पना के अनुसार आप इन दोनों लेन-देनों को कैसे रिकॉर्ड करेंगे?

› पहला कदम: पहचानिए कि कौन सा लेन-देन 'महत्वपूर्ण' है और कौन सा 'मामूली'।

› दूसरा कदम: ₹10,00,000 की मशीन व्यवसाय की कमाई करने की क्षमता पर सीधा असर डालेगी, इसलिए इसे 'परिसंपत्ति' (asset) के रूप में दर्ज किया जाएगा और इस पर 'ह्रास' (depreciation) की गणना की जाएगी। यह एक 'सार' (material) लेन-देन है।

› तीसरा कदम: ₹500 के पिन का कंपनी की वित्तीय स्थिति पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा। इन्हें 'स्टेशनरी खर्च' (stationery expense) मानकर सीधे लाभ-हानि खाते में व्यय के रूप में दर्ज कर दिया जाएगा, भले ही ये पिन पूरे साल चलें। इन्हें 'परिसंपत्ति' नहीं माना जाएगा और न ही इन पर ह्रास गिना जाएगा। यह एक 'असार' (immaterial) लेन-देन है।

› निष्कर्ष: महत्वपूर्ण लेन-देन (मशीन) को लेखांकन नियमों के अनुसार पूरी गंभीरता से रिकॉर्ड किया गया, जबकि मामूली लेन-देन (पिन) को सरलता से एक खर्चे के रूप में दर्ज किया गया।

उत्तर – ₹10,00,000 की मशीन को परिसंपत्ति के रूप में और ₹500 के पिन को व्यय के रूप में दर्ज किया जाएगा।

उदाहरण 15. एक कंपनी ने ₹50,000 की मशीन नकद खरीदी। लेखापाल ने इसे अपनी किताबों में ₹55,000 लिख दिया, क्योंकि उसे लगा कि मशीन अच्छी क्वालिटी की है और भविष्य में इसका मूल्य बढ़ सकता है। क्या यह वस्तुनिष्ठता की संकल्पना का पालन है?

› स्टेप 1: वस्तुनिष्ठता की संकल्पना कहती है कि लेखांकन लेन-देन लेखाकार के पूर्वाग्रहों (personal biases) से मुक्त होना चाहिए।

› स्टेप 2: मशीन ₹50,000 में खरीदी गई थी और इसका नकद रसीद या बिल ₹50,000 का होगा, जो कि एक वस्तुनिष्ठ प्रमाणक है।

› स्टेप 3: लेखापाल ने अपनी निजी राय (कि मशीन अच्छी क्वालिटी की है और मूल्य बढ़ सकता है) के आधार पर ₹55,000 लिखा, जो सहायक दस्तावेज़ से मेल नहीं खाता।

› स्टेप 4: यह वस्तुनिष्ठता की संकल्पना का उल्लंघन है। लेन-देन को केवल ₹50,000 पर ही रिकॉर्ड करना चाहिए था।

उत्तर – नहीं, यह वस्तुनिष्ठता की संकल्पना का पालन नहीं है। मशीन को उसके वास्तविक खरीद मूल्य ₹50,000 पर ही रिकॉर्ड किया जाना चाहिए।

उदाहरण 16. मान लीजिए एक व्यापारी ने ₹5,000 का माल नकद बेचा। इसे द्विअंकन प्रणाली के अनुसार कैसे दर्ज करेंगे?

› पहचानें कि इस लेन-देन के कौन से दो प्रभाव हैं: एक तो माल बिका (विक्रय), और दूसरा नकद पैसा आया (रोकड़)।

› द्विअंकन प्रणाली के नियम के अनुसार, जो चीज़ आती है या बढ़ती है उसे 'डेबिट' करते हैं, और जो चीज़ जाती है या घटती है उसे 'क्रेडिट' करते हैं।

› यहाँ रोकड़ (Cash) आ रही है, तो 'रोकड़ खाता' डेबिट होगा।

› माल (Goods) जा रहा है (यानी 'विक्रय' बढ़ रहा है), तो 'विक्रय खाता' क्रेडिट होगा।

› हम लिखेंगे: रोकड़ खाता डेबिट ₹5,000 और विक्रय खाता क्रेडिट ₹5,000।

उत्तर – रोकड़ खाता (Cash A/c) डेबिट ₹5,000, विक्रय खाता (Sales A/c) क्रेडिट ₹5,000

उदाहरण 17. एक कंपनी ने 10,000 रुपये का सामान जनवरी 2024 में उधार बेचा। ग्राहक ने फरवरी 2024 में भुगतान किया। इस लेन-देन को नकद आधार और उपार्जन आधार पर कब दर्ज किया जाएगा?

› नकद आधार पर: कंपनी को नकद भुगतान फरवरी 2024 में मिला, इसलिए इसे फरवरी 2024 में 'बिक्री' के रूप में दर्ज किया जाएगा।

› उपार्जन आधार पर: सामान की बिक्री जनवरी 2024 में हुई, इसलिए इसे जनवरी 2024 में ही 'बिक्री' के रूप में दर्ज किया जाएगा, भले ही नकद फरवरी में मिला हो।

उत्तर – नकद आधार पर फरवरी 2024 में, और उपार्जन आधार पर जनवरी 2024 में।

उदाहरण 18. अगर दो कंपनियाँ A और B अपनी इन्वेंटरी (सामान) का मूल्यांकन अलग-अलग तरीकों से करें, तो क्या समस्या होगी?

› पहला, कंपनी A 'FIFO' (पहले आओ, पहले जाओ) विधि से मूल्यांकन करती है, जबकि कंपनी B 'भारित औसत' (Weighted Average) वधि से।

› दूसरा, दोनों विधियों से इन्वेंटरी का मूल्य और अंततः लाभ अलग-अलग आएगा।

› तीसरा, अगर लेखांकन मानक न हों, तो दोनों कंपनियां अपने पसंदीदा तरीके से मूल्यांकन करेंगी।

› चौथा, निवेशक और बैंक दोनों कंपनियों की वित्तीय स्थिति की तुलना नहीं कर पाएंगे, क्योंकि उनके डेटा 'मानक' नहीं हैं।

› पाँचवाँ, लेखांकन मानक यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी कंपनियां एक ही मान्य विधि का उपयोग करें, जिससे तुलना आसान हो।

उत्तर – लेखांकन मानकों के अभाव में कंपनियों की इन्वेंटरी का मूल्यांकन अलग-अलग होने से वित्तीय विवरणों की तुलना करना असंभव हो जाएगा, जिससे सही आर्थिक निर्णय लेना मुश्किल होगा।

उदाहरण 19. मान लीजिए एक दुकानदार ने दिल्ली में ₹5000 का सामान बेचा। इस पर 18% GST लगता है। बताइए, ग्राहक को कितना GST देना होगा और दुकानदार को CGST व SGST के रूप में कितना-कितना टैक्स सरकार को जमा करना होगा?

› कुल GST की गणना: ₹5000 का 18% = ₹900।
› चूंकि यह बिक्री दिल्ली के अंदर हुई है, इसलिए 900 रुपये का आधा CGST होगा और आधा SGST।
› CGST = ₹900 / 2 = ₹450।
› SGST = ₹900 / 2 = ₹450।

उत्तर – ग्राहक को कुल ₹900 GST देना होगा। दुकानदार ₹450 CGST और ₹450 SGST सरकार को जमा करेगा।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. अक्सर 'लेखांकन के सैद्धांतिक आधारों की आवश्यकता' पर सीधा प्रश्न पूछा जाता है, इसलिए इनके मुख्य बिंदुओं को अच्छे से समझ कर याद करें.

• GAAP एक बहुत महत्वपूर्ण अवधारणा है. इसके अलग-अलग नामों (संकल्पना, परपिाटी, अवधारणा) को समझकर जाना, और यह क्यों आवश्यक है – 'एकरूपता' और 'विश्वसनीयता' – इन बिंदुओं पर खास ध्यान देना. बोर्ड परीक्षा में अक्सर इसकी परिभाषा और महत्व पूछा जाता है.

• यह संकल्पना अक्सर 3-4 अंकों के प्रश्न में पूछी जाती है, जहाँ आपको इसका महत्व और दैनिक लेन-देनों पर इसका प्रभाव समझाना होता है।

• यह संकल्पना यह तय करने में मदद करती है कि क्या रिकॉर्ड करें और क्या नहीं, इसलिए इसके उदाहरणों को ध्यान से समझें क्योंकि प्रश्न सीधे उदाहरणों पर आ सकते हैं।

• यह संकल्पना आपके बोर्ड परीक्षा में वस्तुनिष्ठ (objective) प्रश्नों में पूछी जा सकती है, जैसे कि 'किस संकल्पना के अनुसार व्यवसाय लंबे समय तक चलेगा?'

• यह संकल्पना बहुत महत्वपूर्ण है! 'क्यों' ज़रूरी है, इसे अच्छी तरह समझना और उदाहरणों के साथ समझाना सीख लो, क्योंकि यह अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछा जाता है.

• यह संकल्पना अक्सर छोटे न्यूमेरिकल प्रश्नों में पूछी जाती है जहाँ आपको परिसंपत्ति की सही लागत निकालने के लिए सभी संबंधित खर्चों को जोड़ना होता है।

• यह संकल्पना लेखांकन की नींव है, इसलिए बोर्ड परीक्षा में इस पर आधारित छोटे सवाल या समीकरण के संतुलन पर प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं। इसे बहुत ध्यान से समझें!

• यह संकल्पना आपके 'वित्तीय विवरणों की तैयारी' से जुड़े प्रश्नों में बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर जब आपको आय और व्यय को सही लेखा वर्ष में दिखाना होता है। ध्यान रखना कि 'उपार्जित आय' और 'अग्रिम आय' के समायोजन इसी संकल्पना पर आधारित हैं।

• आगम व्यय मिलान संकल्पना पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं जहाँ आपको अलग-अलग अवधियों के आगम और व्यय को सही ढंग से पहचानना होता है।

• यह संकल्पना अक्सर 'समनुरूपता' और 'सारता' संकल्पनाओं के साथ मिलाकर पूछी जाती है। ध्यान रहे कि आप इन सभी के बीच के अंतर और संबंध को स्पष्ट रूप से समझा पाएं।

• यह संकल्पना आपको प्रैक्टिकल सवाल हल करते समय याद रखनी होगी, खासकर जब आप विभिन्न वर्षों या विभिन्न कंपनियों के वित्तीय विवरणों की तुलना कर रहे हों। अक्सर, केस स्टडीज़ में इसके उल्लंघन से जुड़े प्रश्न आते हैं।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। स्टॉक मूल्यांकन और संदिग्ध ऋणों के प्रावधान वाले प्रश्न इसी सिद्धांत पर आधारित होते हैं, इन्हें ध्यान से समझना।

• यह संकल्पना एक अवधारणात्मक प्रश्न (conceptual question) के रूप में अक्सर पूछी जाती है कि कौन सी चीज़ें सारता के नियम के अंतर्गत आती हैं या नहीं। उदाहरण देकर स्पष्टीकरण देने के लिए तैयार रहें।

• यह संकल्पना बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर जब वस्तुनिष्ठ प्रश्न आते हैं। याद रखें, 'सहायक दस्तावेजों द्वारा सत्यापित' शब्द बहुत मायने रखता है। इसका मतलब है कि हर एंट्री के लिए आपके पास एक पक्का सबूत होना चाहिए।

• बोर्ड परीक्षा में, इन दोनों प्रणालियों के बीच का अंतर और उनकी मुख्य विशेषताओं पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं। खासकर यह याद रखना कि द्विअंकन क्यों बेहतर है।

• यह कॉन्सेप्ट बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। नकद और उपार्जन आधार के बीच का अंतर और उनके उदाहरणों को अच्छे से समझ लो, सीधे सवाल आ सकते हैं।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर लेखांकन मानकों की आवश्यकता, लाभ और सीमाओं पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, इसलिए इन्हें अच्छे से समझ लेना और याद रखना।

• GST के प्रकार (CGST, SGST, IGST) और उनके लागू होने की स्थिति पर अक्सर छोटे प्रश्न आते हैं। इसे अच्छे से समझ लेना, यह परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

एक नज़र में रिवीज़न

› लेखांकन सिद्धांत: वित्तीय जानकारी की एकरूपता और विश्वसनीयता के लिए आवश्यक.

› GAAP: लेखांकन में एकरूपता लाने वाले सर्वमान्य नियम (संकल्पना, परपिटी, अवधारणा).

› व्यवसाय और मालिक पृथक इकाईयाँ; मालिक की पूँजी व्यवसाय की देनदारी है।

› केवल मौद्रिक लेन-देन का लेखांकन, गुणात्मक पहलुओं का नहीं।

› मान्यता कि व्यवसाय लंबे समय तक चलेगा, संपत्ति क्रय मूल्य पर।

› निश्चित समय (सामान्यतः 1 वर्ष) पर वित्तीय विवरण बनाना, आकलन और निर्णय हेतु।

› परिसंपत्तियां क्रय मूल्य + परिवहन + स्थापना + अन्य संबंधित व्यय पर दर्ज होंगी।

› हर लेन-देन का दोहरा प्रभाव, परिसंपत्तियां = देयताएं + पूंजी, हमेशा संतुलित।

› आय तभी रिकॉर्ड करें जब अर्जित हो (वस्तु बेची/सेवा दी), न कि नकद मिलने पर।

› कमाई और खर्चे उसी अवधि के मैच करो, चाहे कैश आया या गया।

› सभी महत्वपूर्ण वित्तीय तथ्य पूर्ण व स्पष्ट रूप से प्रस्तुत हों (टिप्पणियों सहित)।

› लेखांकन नीतियाँ व तरीके वर्ष-दर-वर्ष समान रहें; तुलनात्मकता हेतु।

› संभावित हानि के लिए प्रावधान, संभावित लाभ को अर्जित होने पर ही दर्ज करें।

› केवल महत्वपूर्ण तथ्यों का प्रकटीकरण; मामूली बातों को सरल करना।

› लेखांकन निष्पक्ष हो, पूर्वाग्रहों से मुक्त, प्रमाणकों से सत्यापित।

› द्विअंकन: दोहरी प्रविष्टि, विश्वसनीय। एकल अंकन: अपूर्ण, कम विश्वसनीय।

› नकद आधार: नकद लेन-देन पर। उपार्जन आधार: लेन-देन होने पर (भले ही नकद न मिला हो)।

› लेखांकन मानक: एकरूपता, विश्वसनीयता, ICAI द्वारा जारी नियम; लाभ व सीमाएं।

› GST: 'एक देश एक कर', CGST/SGST (राज्य में), IGST (राज्यों के बीच)।